अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्व ज्ञान वर्ष : 2019 **दिनांक : 20-12-2019**

समय : 3 घंटा **षष्ठम वर्ष-द्वितीय प्रश्न पत्र** **पूर्णांक : 100**

पच्चीस बोल, तत्त्व चर्चा, पच्चीस बोल की चर्चा, पच्चीस बोल की चतुर्भंगी-20

प्र. 1 **पच्चीस बोल**-किन्हीं पांच प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दें- 5

(क) चौबीस दण्डकों में श्रावक का दण्डक कौन सा?

(ख) प्राण किसे कहते हैं?

(ग) काय योग का अन्तिम भेद लिखें।

(घ) आठ कोटि के त्योग का भांगा लिखें।

(ङ) उष्ण व रूक्ष स्पर्श की बहुलता से कौन सा स्पर्श बनता है?

(च) किस शरीर का अंगोपांग नहीं होते?

प्र. 2 **तत्त्वचर्चा**-किन्हीं पांच प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दें- 5

(क) अठारह पापों के सेवन का त्याग करना छह में कौन? नौ में कौन?

(ख) छह द्रव्य में एक कितने? अनेक कितने?

(ग) अरिहंत भगवान सूक्ष्म या बादर?

(घ) सामायिक पुण्य या पाप?

(ङ) कर्मों को बांधने वाला छह में कौन? नौ में कौन?

(च) धूप छांह छह में कौन? नौ में कौन?

(छ) बंध छह में कौन? नौ में कौन?

प्र. 3 **पच्चीस बोल की चर्चा**-किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दें। किसमें व कौन से?- 6

(क) चार द्रव्य

(ख) तीन दृष्टि-समुच्चय जीव के अलावा किसमें?

(ग) चौबीस दण्डक

(घ) छह योग

(ङ) पांच शरीर-समुच्चय जीव के अलावा किसमें?

प्र. 4 **चतुर्भंगी** किन्हीं चार प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें- 4

(क) लेश्या जीव या अजीव?

(ख) ध्यान किस कर्म का उदय?

(ग) कौन सा द्रव्य कम? कौन सा द्रव्य अधिक?

(घ) कर्म किस कर्म का उदय?

(ङ) किस चारित्र वाले जीव कम, किस चारित्र वाले जीव अधिक

(च) तुम्हारे में आश्रव के भेद कितने?

प्रतिक्रमण, जैन तत्त्व प्रवेश (प्रथम खण्ड) कर्म प्रकृति–20

प्र. 5 **जैन तत्त्व प्रवेश** किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 9

(क) षड्द्रव्य द्वार–पुद्गलास्तिकाय से प्रारंभ करते हुए अंत तक लिखें।

(ख) हेय ज्ञेय उपादेय द्वार

(ग) दृष्टांत द्वार–बंध के बाद वाले प्रश्नोत्तर लिखें।

(घ) भाव द्वार–औदायिक भाव को विवेचित करें।

प्र. 6 **प्रतिक्रमण**–निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें– 5

(क) प्रायश्चित सूत्र अथवा कायोत्सर्ग प्रतिज्ञा।

प्र. 7 **कर्म प्रकृति**–किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) चारित्र मोह की प्रकृतियों की स्थिति

(ख) मोहनीय कर्म की गुणस्थानों में अवस्थिति

(ग) प्रत्येक प्रकृति को परिभाषित करते हुए उसके अंतिम पांच भेदों का वर्णन।

बावन बोल, इक्कीस द्वार, जैन तत्त्व प्रवेश (द्वितीय-तृतीय खण्ड)–20

प्र. 8 **बावन बाल**–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) चौदह गुणस्थानों में संवर के कितने-कितने बोल पाते हैं?

(ख) चौबीस दण्डकों में लेश्या कितनी?

(ग) बाईस परीषह किस-किस कर्म के उदय से?

(घ) चौदह गुणस्थानों में शरीर कितने?

(ङ) उदय के तैंतीस बोलों में सावद्य कितने? निरवद्य कितने?

प्र. 9 **इक्कीस द्वार**–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें–कितने व कौन से 6

(क) असंज्ञी–उपयोग, दृष्टि, लेश्या, दण्डक।

(ख) चक्षुदर्शनी–गुणस्थान, योग, उपयोग दण्डक।

(ग) औपशमिक–सम्यक्त्वी-जीव का भेद, उपयोग, भाव, दण्डक।

(घ) अभाषक–गुणस्थान, योग, दृष्टि व वीर्य।

(ङ) वचन योगी–जीव के भेद, गुणस्थान, योग, दण्डक।

प्र. 10 **जैन तत्त्व प्रवेश**–निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखें– 8

(क) पुण्य-पाप द्वार लिखें ***अथवा*** धर्म-अधर्म द्वार लिखें।

(ख) चींटी, मकोड़े, जूं आदि की पृच्छा ***अथवा*** तथा चोर तीनूं.....रो नेम। इस दोहे को पूरा करें।

लघु दण्डक व पांच ज्ञान–20

प्र. 11 **लघु दण्डक**–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 12

(क) तिर्यंच की स्थिति–त्रीन्द्रिय से प्रारंभ करते हुए अंत तक लिखें।

(ख) लेश्या को परिभाषित करते हुए छठी नरक से प्रारंभ करते हुए अंत तक लिखें।

(ग) उपयोग द्वार

(घ) उत्पत्ति द्वार

(ङ) समुद्घात द्वार।

प्र. 12 **पांच ज्ञान**–निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखें– 8

(क) मनःपर्यवज्ञानी का विषय-क्षेत्रतः ***अथवा*** अवधिज्ञान का विषय लिखें।

(ख) श्रुत के समुच्चय रूप से प्रकारों को ***अथवा*** मनःपर्यवज्ञान का स्वामी व मतिज्ञान श्रुतज्ञान के भेद लिखें।

संजया-नियंठा–20

प्र. 13 **संजया**–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 12

(क) छेदोपस्थापनीय चारित्र की स्थिति द्वार लिखते हुए बताऐं कि अनेक जीवों की अपेक्षा से जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति की संगति किस प्रकार बैठती है?

(ख) प्रव्रज्या द्वार से आप क्या समझते हैं? टिप्पण के आधार पर विवेचना कीजिए।

(ग) परिहार विशुद्धि चारित्र का आकर्ष द्वार लिखते हुए समझाऐं कि अनेक भव की अपेक्षा से किस प्रकार चारित्र पर्याय का ग्रहण किया जा सकता है?

(घ) यथाख्यात चारित्र का परिणाम द्वार लिखते हुए टिप्पण के आधार पर बताऐं कि इस चारित्र वालों के परिणाम किस प्रकार घटित होते हैं?

प्र. 14 **नियंठा**–किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 8

(क) जयाचार्य ने भगवती की जोड़ में अप्रतिसेवी पाठ के संबंध में अपना क्या अभिप्राय बताया है? स्पष्ट करें।

(ख) बकुश का आकर्ष द्वार एवं स्थिति द्वार लिखते हुए बताऐं कि बकुश को सदाकाल किस अपेक्षा से कहा गया है।

(ग) पुलाक की स्थिति द्वार लिखते हुए बताऐं कि एक जीव तथा अनेक जीव की अपेक्षा से स्थिति किस प्रकार हो सकती है?

(घ) कषाय कुशील का प्रवज्या द्वार लिखते हुए बताऐं कि पूर्व पर्याय की अपेक्षा से वह संख्या किस प्रकार घटित हो सकती है?